Deg 1
Mahabharat P-I

महमूद के आक्रमणों की विवेचना

महमूद गजनवी के द्वारा 27 वर्षों के अन्दर लगभग 17 बार भारत पर आक्रमण किया गया। प्रत्येक आक्रमण में महमूद अतुल सम्पत्ति के साथ गजनी लौटा। भारतीय शासकों ने जब डटकर विरोध किया तो महमूद को विजय के प्रति शंका उत्पन्न हो जाती थी। आनन्दपाल, विद्याधर और बाजीराय जैसे भारतीय नरेशों ने साहस और बहादुरी के साथ महमूद गजनवी का सामना किया था, परन्तु वे पराजित हुए और अन्ततः उन्हें महमूद के साथ सन्धि कर लेनी पड़ी। कुछ भारतीय नरेश महमूद की शक्ति को देखकर इतना भयभीत हो गये थे कि वे बिना युद्ध किये मैदान छोड़कर भाग निकले। वैसे शासकों में राज्यपाल और भीमदेव का उल्लेख किया जाता है। भारतीय नरेशों के बीच आपसी फूट थी। उनमें एकता और शक्तिशाली संगठन का अभाव था। महमूद ने साहस, कूटनीति एवं आत्मविश्वास की नीति अपनाकर भारत पर आक्रमण किया था। वह गुप्तचरों के माध्यम से शत्रुपक्ष की कमजोरी का पता लगा लेता था और अवसर का लाभ उठाकर हार को जीत में बदल देता था। महमूद सैनिकों के बीच लूट का माल बाँट देता था तथा उनके सामने इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार का उदाहरण पेश कर उन्हें युद्ध भूमि में निर्णायक युद्ध करने के लिए प्रेरित करता था। आर्थिक लाभ और धार्मिक जोश से ओत-प्रोत महमूद के सैनिक काफिरों की हत्या -

P.T.O

कर सन्तुष्ट हो जाते थे और बार-बार आक्रमण करने से हिचकिचाते नहीं थे। महमूद सैनिकों का संचालन स्वयं करता था। महमूद के सैनिकों की संख्या में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी भी उसके विजय अभियान की सफलता का एक कारण था। वस्तुतः भारतीय राज्यों और मन्दिरों की लूट से महमूद ने अपार सम्पत्ति प्राप्त की और अफगानिस्तान, मुल्तान, पंजाब और सिन्ध को पराजित कर उसने भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना का द्वार खोल दिया था। आगे चलकर इन प्रदेशों में रहनेवाले मुसलमानों का सहयोग विदेशी आक्रमणकारियों को प्राप्त हुआ और अन्ततः भारत में इस्लामी साम्राज्य की स्थापना एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में उभड़कर सामने आयी।

Scanned with CamScanner